कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 07, (दिसंबर, 2023)
पृष्ठ संख्या 27–28

जिमीकन्द की वैज्ञानिक खेती से पाएं अधिकाधिक लाभ

लालू प्रसाद[1], राकेश कुमार[1], वीरेन्द्र कुमार[1] एवं डॉ.सी. एन. राम[2]

[1](शोध छात्र) एवं [2]प्राध्यापक विभागाध्यक्ष,
सब्जी विज्ञान विभाग,
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या (उ.प्र.), भारत।

Email Id: laluprasadrsm@gmail.com

जिमीकन्द को अनेक नामों से जाना जाता है जैसे सूरन या ओल भी कहते हैं। साधारणतः इसको गृह वाटिका या घर के अलग–बगल की जमीन में उगाते हैं। लेकिन अब इसकी खेती बड़े पैमाने पर की जा रही है और लाभकारी है। अपने औषधियों गुणों के कारण यह बहुत सी आयुर्वेदिक औषधियों में प्रयुक्त होता है। जैसे रक्तविकार नाशक, कब्जनाशक, आदि में लाभदायक, तथा मंदाग्निरोधी होता है। जिमीकन्द का जन्म स्थान भारत है।

आहार मूल्य –

आहार मूल्य इस प्रकार है।

प्रोटीन खनिज पदार्थ–1.2–1.5 ग्राम

नमी–74.9 से 78.9 ग्राम

वसा–0.1 ग्राम

कार्बोहाइड्रेट्स–18.1 से 18.4 ग्राम

कैल्शियम–50 मि० ग्राम

फास्फोरस–20 मि० ग्राम

लोहा–00.6 मि० ग्राम

थियामिन–00–6 मि० ग्राम

नायसिन– 75 मिलीग्राम

रीबोफ्लेविन–00.7 मि० ग्राम

स्टार्च–10–12 ग्राम

विटामिन 'ए'–260 IU

जलवायु

इसकी अच्छी खेती के लिये अंकुरण की अवधि में उच्च तापमान, वनस्पतिक बढ़वार के लिए आर्द्र–गर्म वातावरण और कन्दों की बढ़ोतरी के लिए शुष्क और कम तापमान की जरूरत होती है।

भूमि

जिमिकंद की खेती के लिये हल्की बलुई दोमट मिट्टी और जीवांश पदार्थ की अधिकता हो तथा जलधारण की क्षमता अच्छी होने के साथ–साथ जल जमाव की समस्या न हो, अच्छी होती है। रोपाई से पहले मिट्टी पलटने वाले हल से दो गहरी जुताई करने के बाद दो बार देशी हल से जुताई करके पाटा चलाकर खेत को समतल और तैयार कर लेना चाहिए।

बोने का ढंग

इसकी खेती के लिए अंतरण 1 मीटर X 1 मीटर की दूरी पर 30 X 30 X 30 से० मी० (लम्बाई X चौड़ाई X गहराई) के आकार के गड्ढे खोद लें। इस प्रकार प्रति हेक्टर क्षेत्र में लगभग 10,000 गड्ढे बनेंगे। इन्हीं गड्ढों में कन्दों की बुवाई की जाती है। यदि खेत में नमी की कमी हो तो बोवाई से पहले एक सिंचाई करके नमी को सुनिश्चित करने के बाद ही गड्ढों की खुदाई करनी चाहिये।

बोने का समय

जिमिकंद की बुवाई का समय मार्च से जून के बीच अच्छा होता है।

बीज दर

आधा किलोग्राम से 1 किलोग्राम के कन्द बीज के लिए उत्तम पाये गये हैं। आधा किलोग्राम के कन्द लगाने पर 50 कुन्तल बीज प्रति हेक्टर की जरूरत होगी। बोने से पूर्व बीज कन्दों को 2 प्रतिशत तूतिया के घोल में 5 उपचारित कर लेना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक

इसकी फसल के लिए 80 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम फास्फोरस तथा 96 किलोग्राम पोटाश प्रति हेक्टर की जरुरत होती है। यदि अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए 200 कुन्तल कम्पोस्ट, 175 किलोग्राम यूरिया, 375 किलोग्राम सिंगल सुपरफास्फेट तथा 160 किलोग्राम म्यूरेट आफ पोटाश प्रति हेक्टर देना चाहिए। इन सभी उर्वरकों को गड्ढों में ही डालना अच्छा होता है। प्रति गड्ढे के हिसाब से उर्वरकों की मात्रा निम्न प्रकार होगी–

(अ) बोवाई से पहले प्रति गड्ढा

कम्पोस्ट– 2 किलोग्राम, यूरिया–8.75ग्राम, सिंगल सुपरफास्फेट–37.5 ग्राम, म्यूरेट आफ पोटाश–16 ग्राम, इन उर्वरकों को गड्ढों में डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें।

(ब) बोवाई के 80–90 दिन बाद प्रति गड्ढा – यूरिया 8.75 ग्राम – इस मात्रा को 80–90 दिन बाद पौधों के चारों तरफ डालकर मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए।

प्रजातियाँ –

मुख्य और अधिक उपज देने वाली किस्मों में मुख्य रूप से हैदराबादी और त्रिवेन्द्रमीअच्छी पायी गयी हैं। इन किस्मों में साइड टयूबर भी कम होते हैं तथा कैल्सियम आक्जलेट की मात्रा इनमें लगभग नहीं के बराबर होती है, जिससे इनमें कड़वाहट नहीं पायी जाती हैं। इसी कारण इन किस्मों की लोकप्रियता बढ़ रही है।

अन्य प्रजातियाँ:

सन्तरागाची, कोक्वयुर, गजेन्द्र कन्द फसल अनुसंधान संस्थान केरल ने अनुवांशिक स्टाक से ए०एम० 6, 7, 8 व 16 नम्बर के चयनों को उत्तम पाया है।

निकाई–गुड़ाई

बोवाई के लगभग 40–60 दिनों पर पहली और 80–90 दिनों बाद दूसरी निराई करें। निराई के साथ–साथ पौधों पर मिट्टी चढ़ाना अति आवश्यक होता है

सिंचाई

नमी की कमी रहने पर मानसून से पहले एक सिंचाई करें तथा वर्षात् में वर्षा की कमी होने पर ही सिंचाई की जरूरत होती है। फसल के लिये जल निकास का उचित प्रबन्ध होना भी अति आवश्यक है।

पादप संरक्षण

जिमीकन्द ओल की फसल झुलसा रोग से अधिक प्रभावित होती है जो विशेषकर सितम्बर–अक्टूबर महीने में लगता है, जिससे पत्ते झुलस जाते हैं और तना गलने लगता है और कन्दों का बढ़ाव रुक जाता है। अतः इसकी रोकथाम के लिये निम्नलिखित उपाय करना चाहिए:

1. स्वस्थ बीज कन्द प्रयोग करना चाहिए।
2. उपचारित बीज को बोना चाहिए।
3. ब्लीचिंग पाउडर का उपयोग करना चाहिए।
4. लक्षण दिखाई पड़ने पर 1 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर से बेवस्टीन का छिड़काव करना अच्छा होता है।

खुदाई एवं उपज:

अच्छी प्रकार से खेती करने पर इसकी फसल नवंबर से दिसंबर में तैयार हो जाती है। इस प्रकार इसकी खुदाई नवम्बर के अन्तिम सप्ताह से दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक कर लेना चाहिये। खुदाई करने में यह ध्यान रखें कि कन्द कटने न पायें। कन्दों को साफ करके हवादार स्थान या मचान पर भण्डारित करना चाहिए। इस फसल से 500 ग्राम भार का बीज कन्द उपयोग करने पर औसतन 400 कुन्तल प्रति हैक्टर उपज प्राप्त होती है।